इकाई 14 बॉक्सर विद्रोह

इकाई की रूपरेखा

14.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप निम्न बातों की व्याख्या कर पायेंगे:

- उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में चीन की बिगड़ती सामाजिक आर्थिक स्थितियां,
- चीन में साम्राज्यवादी अतिक्रमण की सीमा,
- बॉक्सरों का उदय, उनकी गतिविधियां और उन्हें दबाने के प्रयास, और
- बॉक्सर विद्रोह का अंत करने वाले बॉक्सर प्रोटोकॉल की विशेषताएं।

14.1 प्रस्तावना

सन् 1900 का बॉक्सर विदोह या यी हो तुआन आंदोलन साम्राज्यवाद के विरुद्ध एक बड़ा किसान विद्रोह था, यी हो तुआन का अर्थ होता है सदाचारिता और तालमेल। इस संगठन का उदय और विकास चीन के शांतुंग प्रांत में हुआ। चीनी जिसे अधिकारिक तौर पर यी हो तुआन आंदोलन कहते हैं। पश्चिमी विद्वान उसे बॉक्सर विद्रोह कहते हैं, इसे बॉक्सर (या मुक्केबाज़) विद्रोह इसलिये कहते हैं क्योंकि इस आंदोलन के अनेक कार्यकर्ता और क्रांतिकारी चीनी युद्ध कलाओं का अभ्यास करते थे, जिनमें "बॉक्सिंग (या, मुक्केबाजी) भी थी।

वैसे तो इस आंदोलन का पहला निशाना ईसाई धर्म का प्रचार करने वाले मिशनरी थे, फिर भी इसका असली ध्येय साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष करना था। यह हिंसक, नाटकीय और विप्लवकारी आंदोलन विदेशी शक्तियों द्वारा चीनी राष्ट्र को गुलाम बनाने और उन बिगड़ती सामाजिक, आर्थिक स्थितियों का परिणाम था जिन्हें राजनीतिक स्तर पर सुधार करके रोकना संभव नहीं था। चीन पर पश्चिमी अतिक्रमण की कसर पूरी करने के लिये जापानी साम्राज्यवाद भी जापान को और कुचल देने वाली शक्ति के रूप में उभरा। मांचू शासन या चिंग वंश अपनी आंतरिक स्थितियों के कारण और चीन पर साम्राज्यवादी प्रभुत्व होने के कारण भी सभी मोर्चों पर काफी हद तक कमजोर हो गया था। बॉक्सर विद्रोह ने साम्राज्यवादी शासकों और मांचू शासकों पर भी जबरदस्त प्रहार किया। अंत में सरकार ने साम्राज्यवादी ताकतों की मदद से इस आंदोलन को दबाया, जिसके परिणामस्वरूप 1910 के बॉक्सर प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर हुए – यह सबसे अपमानजनक असमान संधि थी। इसके तहत चीन को विदेशियों को जो हरजाने देने पड़े वे इतने भारी थे कि इन्हें वसूलने के लिए चीनी जनता को पीस डाला गया। इससे चीन की आंतरिक स्थिति और भी बिगड़ गयी, और अंत में इन्होंने और भी क्रांतिकारी विद्रोह को जन्म दिया, जिससे 1911 में राजतंत्र का पतन ही हो गया। यी हो तुआन (बॉक्सर आंदोलन) के लगभग सभी पहलुओं पर इस इकाई में विचार किया गया है।

14.2 चीन की सामाजिक-आर्थिक स्थितियां

यहां हम 19वीं शताब्दी में चीन की सामाजिक-आर्थिक स्थितियों पर चर्चा कर रहे हैं।

इस अवधि के दौरान जनसंख्या में हुई वृद्धि के परिणमस्वरूप शिक्षित या साक्षर वर्ग में बेरोजगारों की संख्या में वृद्धि हुई। सरकारी नौकरियों के लिये होड़ मच गयी क्योंकि घटते सँसाधनों के दावेदार अब और भी अधिक हो गये थे। चिंग सरकार ने प्रशासनिक ढांचे को जनसंख्या की वृद्धि और वाणिज्य के अनुसार बनाने के लिये उसका पर्याप्त विस्तार नहीं किया सरकार के संस्थात्मक ढांचे में वृद्धि न हो पाने का अर्थ यह हुआ कि पढ़े-लिखे युवा उन्नति नहीं कर पाये। नौकरी की होड और कुंठा के कारण सभी स्तरों पर भ्रष्टाचार फैल गया। घूस, भाई- भतीजावाद और पक्षपात, ने प्रशासन की प्रक्रियाओं पर उलटा प्रभाव डाला। इसके चलते कन्फ्यूशिसवादी सिद्धांत की श्रेष्ठता भी भंग हुई। व्यक्तिगत गुट और संरक्षितों का जाल उभरा जिसका परीक्षा व्यवस्था, कराधान और न्याय-प्रशासन पर उल्टा प्रभाव पड़ा।

किसान और भी पिस गया। जिन प्रांतीय अधिकारियों का मुख्य काम यह था कि वह उनको दिये गये कोटे के अधिकार पर खेतीहरों से कर लें और कुछ अधिशेष या अतिरिक्त राशि अपने लिये रखें, वे अधिकारी आम आदमी के प्रति निर्मम बन गये। इन अधिकारियों से केंद्रीय कोषागार की माँग बहुत अधिक थी क्योंकि पीकिंग सरकार सेना, राजदरबार के अधिकारी वर्ग और भव्य समारोहों के रख-रखाव के लिये संर्घष कर रही थी । अधिकारी अपनी ओर से इस बोझ को किसान वर्ग पर लाद रहे थे, जिसके लिये वे भारी मांगे उन पर थोप रहे थे और सभी किस्म के अत्याचारी तरीके अपना रहे थे। इसका परिणाम यह हुआ कि किसान विद्रोहों की संख्या बढ़ गयी। अनेक किसान गाँव छोड़ कर शहरों को चले गये।

जिस लोक-सेवा ने चीन को शताब्दी दर शताब्दी और वंश दर वंश एक बनाये रखा था वही अब उसकी प्रगति में बाधा बन गयी। अधिकारियों के लोभ और जनता पर मुसीबतें थोपने के साथ- साथ अकाल और बाढ़ जैसी प्राकृतिक विपदाएं भी अक्सर आती रहती थी : सरकार के जनता को राहत देने की दिशा में असफल रहने के कारण गांवों में कष्ट और तनाव कई गुना बढ़ गये। प्रशासन संगठित दमन की मूर्ति ही दिखाई देता था। दूसरी ओर केन्द्रीय सत्ता की वैधता को देश के अनेक भागों में विद्रोहियों ने चुनौती दे रखी थी।

सरकार के कमजोर होने के अतिरिक्त जनसंख्या में भयंकर वृद्धि ने भी प्रौद्योगिक विकास को सीधे-सीधे अवरुद्ध किया। जैसा कि जाँन फेयर बैक ने कहा है,"मानव शक्ति के बहुतायत होने के कारण श्रम बचाने वाले उपकरण खर्चीले पड़े" मानव जीवन और मानव श्रम दोनों ही बहुत सस्ते हो गये थे। आम आदमी के लिये जीवन अस्तित्व के लिये संर्घष हो कर रह गया था। परिवारो को अनाज के प्रत्येक दानों के लिये पानी देना पड़ता था। कुछ लोग करों से बचने के लिये धनी और शक्तिशाली जमींदारों से जुड़ जाते थे और उन्हें मजदूर, गुंडे और लड़कियां देते थे। जो लोग शहरो को भाग गये, उनमें से भाग्यशाली लोग जीवित रहने के लिये सस्ते में अपना श्रम बेच देते थे। बाकी भिखारी वेश्या ,अपराधी आदि हो गये, आत्म-निर्भर किसान के लिये भी यह मुश्किल का समय था। उसे चरित्रहीन अधिकारियों, बड़े जमींदारों के गुंडों और भूमिहीन वर्ग से निकलने वाले डाकुओं से सुरक्षा की आवश्यकता होती थी।

चीन की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में इस गहराते संकट को साम्राज्यवाद की शोषक माँगों ने और भी हवा दी।

14.3 साम्राज्यवाद

अफीम युद्धों में चीन की सैनिक हार और असमान संधि व्यवस्था ने चीन को पश्चिमी ताकतों का एक अर्ध-उपनिवेश सा बना दिया था। साम्राज्यवादी आधुनिकीकरण के नाम पर अपनी कार्यवाहियों को निर्लज्जता से उचित ठहराते थे। उदाहरण के लिये, इंग्लैंड यह दावा करता था कि उसके इस कार्य से चीन राष्ट्रों के परिवार में आ गया था और समानता की शर्तों पर अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में प्रवेश पा ॱ ा था। लेकिन बाहरी हस्तक्षेप ने सम्राट की स्थिति को खटाई में डाल दिया। लोग जिस सम्राट के 'स्वर्ग का पुत्र' होने में विश्वास करते थे उसे

अशक्त देखकर वे निराशा और आघात की स्थिति में थे।

और बातों के साथ, चीन में पश्चिमी ताकतों की घुसपैठ ने भारी संख्या में ईसाई मिशनरियों को प्रवेश दिलाया और चीनियों के साथ व्यापार करने के लिये बिचौलियों का एक वर्ग खड़ा किया जिन्हें कम्प्रेडर (Compradare) कहा जाता था। इस दोनों कारकों ने बाद के वर्षों में देश पर काफी प्रभाव ड़ाला। विदेशी ताकतों और बिगड़ती सामाजिक-आर्थिक स्थितियों की चुनौतियों से सफलतापूर्वक निपटने के लिये चिंग सरकार ने सुधारों के जरिये व्यवस्था को आधुनिक बनाने का प्रयास किया। 1860 के दशक में स्वयं "सुदृढीकरण आंदोलन" छेड़ा गया और बाद में चीनी जीवन के कुछ पहलुओं को कम से कम आंशिक तौर पर ही आधुनिक बनाने के लिये शाही फरमान और कानून पारित किये गये। शिक्षा, सैनिक प्रशिक्षण, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और कानूनी व्यवस्था सभी सुधार आंदोलन के दायरे में आ गये। 1898 में सरकारी तौर पर लागू किये तथाकथित "सौ दिनों के सुधार" में इनमें से अनेक विषयों को छुआ गया, लेकिन ये सुधार "बहुत कम और बहुत देरी से" होने के कारण एक ढहती व्यवस्था द्वारा अपने आपको व्यवस्थित रखने के अंतिम प्रयास जैसे दिखायी दिये।

उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में विश्व पूंजीवाद अपने एकाधिकारवादी चरण में प्रवेश कर गया था जो कि साम्राज्यवाद का चरण होता है, ऐसे चरण में, लेनिन के शब्दों में "आवश्यक वस्तुओं के निर्यात की तुलना में पूंजी का निर्यात अत्याधिक महत्वपूर्ण हो जाता है "विश्व के क्षेत्रीय विभाजन के लिये संघर्ष अत्यधिक तेज हो गया। चीन इस एकाधिकारवादी चरण का एक शिकार था। 1895 में जापान के हाथों चीन की हार और एक और असमान संधि – शिमोनोसेकी संधि संपन्न होने से चीन में एक और साम्राज्यवादी प्रविष्टि हो गयी। चीनियों के लिये यह संकट कभी इतना गंभीर नहीं रहा। शिमोनोसेकी की संधि में यह प्रावधान था कि जापानी व्यापारी चीन के संधिगत बंदरगाहों में कारखाने चालू कर सकते थे। इस प्रावधान से साम्राज्यवाद की यह मांग पूरी हुई कि उसके पास पूंजी के निर्यात के लिये निकासी के मार्ग हों। चीन को इस बात के लिये बाध्य किया गया था कि वह पहले की असमान संधियों में सबसे अनुकूल राष्ट्-संबंधी शर्त को स्वीकार करे जिसका अर्थ यह होता था कि एक को दिये गये विशेषाधिकार दूसरों को भी दिये जायें। इसलिये, जैसे ही जापान को चीन में कारखाने चालू करने का विषेषाधिकार मिला, दूसरी तमाम ताकतों को भी यह विषेषाधिकार मिल गया। 1895-96 के वर्ष में ही कुछ कारखाने चीन में स्थापित हो गये थे जो अपने लिये मुनाफा कमाने की गरज से न केवल चीनियों से सस्ती मजदूरी लेते थे बल्कि इसके अपने उद्योग के विकास को भी अवरुद्ध करते थे.

जापान ने भी चीन पर युद्ध का भारी हरजाना थोप दिया था जिसकी अदायगी के लिये चिंग सरकार को रूस-फ्रांस और आंग्ल-जर्मन एकाधिकार – पूंजीवादी गुटों से दो बड़े ऋण लेने पड़े। बदले में इन गुटों को चीन में विशेषाधिकार देने पड़े। इन ऋणों से जुड़ी ऊंची ब्याज-दरों और राजनीतिक शर्तों ने चीनी प्रभुसत्ता का मजाक बना दिया। साम्राज्यवादी चीन में जिन विदेशी बैंकों के जरिये पूंजी का निर्यात करते थे उन्होंने भी मांचू सरकार के सामने अपनी शर्त रखी।

शिमोनोसेकी की संधि में जापान के चीनी क्षेत्र के बड़े टुकड़ों पर कब्जे का भी प्रावधान था – ये थे हियाओतुंग प्रायद्वीप और ताइवान। इससे चीनी क्षेत्र के लिये अंतर-साम्राज्यवादी भगदड़ की प्रक्रिया की भी शुरुआत हुई। एक समय ऐसा आया जब चीन का विभाजन लगभग अपरिहार्य दिखता था। 1896-98 के बीच अधिकांश चीन विभिन्न साम्राज्यवादी ताकतों के प्रभाव में बंट गया था। उदाहरण के लिये:

- रूस को महान दीवार के उत्तर के क्षेत्र मिले,
- यांगसी घाटी इंग्लैंड को मिली,
- शांतुंग जर्मनी को मिला,
- फ्यूकिएन जापान को और क्वांगतुंग, क्वांगसी और यूनान के बड़े हिस्से फ्रांस को मिले।

इन क्षेत्रीय रियायतों पर अपना कब्जा बनाये रखने के लिये इन ताकतों ने रेलवे का निर्माण तथा अन्य कई निर्माण करने शुरू कर दिये और इन क्षेत्रों के संसाधनों का दोहन किया। इससे चीन में बाहर से पूंजी का आना भी बना रहा। साम्राज्यवादी ताकतों ने वैसे तो चीन का दोहन करने के लिये एक दूसरे का साथ दिया, फिर भी उन्होंने अपने आपको मिलने वाले प्रत्येक अधिकार और विशेषाधिकार को दूसरों से बचा कर भी रखा। इसलिये, इन ताकतों के बीच

टकराव भी एक उल्लेखनीय विशेषता रही।

भारती संख्या में विदेशी मिशनरी चीन आये। अधिकारिक चीनी इतिहास में उन्हें ऐसे व्यक्ति बताया गया जो धर्म का लबादा पहनते थे लेकिन वास्तव में साम्राज्यवादी आक्रमकता को बढ़ावा देते थे। ये मिशनरी चीन-जापान युद्ध से कई वर्षों पहले से चीन में आते रहे थे। उनकी गतिविधियों में गिरजाघरों का निर्माण करना, धर्म का प्रचार करना, और कभी-कभी स्थानीय बाशिंदों के साथ टकराना शामिल था। 1860 के दशक से चीन में मिशनरी-विरोधी संघर्ष छेड़े गये।

बॉक्सर विद्रोह का रुख निश्चित तौर पर ईसाई विरोधी या मिशनरी-विरोधी था, और इसलिये विद्वानों के हलकों में चलने वाली बहसों में इस बात का समाधान निकालने के प्रयास हुए हैं कि यह विद्रोह मुख्य तौर पर "विदेशी विरोधी" था या "मिशनरी-विरोधी"। चीन की कम्युनिस्ट सरकारी विवेचना के अनुसार यह विद्रोह पहले तो साम्राज्यवाद-विरोधी और दूसरे नंबर पर मांचू-विरोधी भी था। संभावना इस बात की बहुत है कि, मिशनरी क्योंकि विदेशी थे, इसलिये वे विद्रोहियों का पहला निशाना बने। जनसाधारण और किसान ईसाई धर्म के घोर विरोधी इस कारण से थे कि ईसाई धर्म सभी विदेशी वस्तुओं का प्रतीक था। बॉक्सर विदोहियों के लिये, विदेशी मिशनरी "पहले शैतान" थे और उनके स्वदेशी चीनी ईसाई "दूसरे शैतान" थे। इसलिये दोनों को समाप्त करना आवश्यक था। विक्टर पर्सेल जैसे अनेक पश्चिमी विद्वान भी यही दृष्टिकोण रखते हैं।

बोध प्रश्न 1

1) उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में चीन की समाजिक-आर्थिक स्थितियों पर लगभग 10 पंक्तियों में चर्चा करें।

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

2) चीन-जापान युद्ध के दौरान और बाद में साम्राज्यवाद ने चीन में किस तरह घुसपैठ की? लगभग 10 पंक्तियों में उत्तर दें।

....
....
....
....
....
....
....
....
....
....

14.4 यी हो तुआन

एक लम्बे समय से चीन में गुप्त संगठन रहे हैं। इन संगठनों ने दलितों को संगठित करके उन्हें अनेक स्थापित व्यवस्थाओं के विरुद्ध विद्रोही बनाया है। जब कभी कष्ट और दुःख असहनीय हो गये तो, लोगों ने या तो डकैती को अपना लिया या वे गुप्त संगठनों के सदस्य हो गये। ऐसे उदाहरण हैं कि गुप्त संगठन के नेताओं ने किसी वंश के विरुद्ध सफल विद्रोह खड़ा करके अपना वंश राज्य स्थापित कर लिया। बॉक्सर विदोहियों या **यी हो तुआन** के संबंध में यह विश्वास किया जाता है कि वे व्हाइट लोटस (या, श्वेत कमल) के थे। यह गुप्त संगठनों का एक गुट था जिसका दावा था कि वह उन मिंग सम्राटों का वंशज था जो 1644 में चिंग के गद्दी हथियाने से पहले चीन पर शासन करते थे। उनकी गतिविधियाँ कुछ-कुछ दबी हुई थीं या एक लंबे समय तक वे ध्यान देने योग्य नहीं रहीः

जैसा कि कुछ सरकारी दस्तावेजों से पता चलता है, अगस्त 1898 में, बॉक्सर विदोही चिल्बी और शां तुंग प्रांतों की सीमाओं पर उभरे। अक्टूबर में विद्रोह की शुरुआत वास्तव में ईसाई – परिवारों और घरों पर हमलों से हुई, इसके कुछ समय पहले इस आशय के इश्तिहार या पोस्टर दिखायी पड़े थे कि नव-ईसाइयों को मार डाला जायेगा। बॉक्सर विद्रोह में भाग लेने वाले अधिकांश व्यक्तियों के बारे में यह विश्वास किया जाता है कि कट्टर मांचू-विरोधी थे जो सभी ओर घृणा के पात्र विदेशियों के विरुद्ध दूसरे विद्रोहियों के साथ जुड़ गये थे। कुछ पोस्टर और दीवार पर लिखी इमारतों से यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि कम से कम बॉक्सर विद्रोहियों का एक गुट मांचू-विरोधी था। विद्रोह की शुरुआत शांतुंग में हुई।

14.4.1 शांतुंग क्यों?

जिस शांतुंग प्रांत में विद्रोह की जड़े गहरी जमी थीं, वहां हिंसा का फूटना कोई आकस्मिक घटना नहीं थी। शांतुंग को साम्राज्यवादी अतिक्रमणों को झेलना पड़ा। चीन-जापान युद्ध के दौरान, जापान की आक्रमणकारी सेनाओं ने शांतुंग प्रायद्वीप पर हमला किया और तीन वर्षों तक इस क्षेत्र पर इस धमकी के साथ कब्जा बनाये रखा कि जब तक हरजाने की राशि पूरी नहीं चुका दी जाती वह वहां से नहीं हटेगा। शांतुंग के दो बड़े बंदरगाह जर्मनी और इंग्लैंड के कब्जे में आ गये। जर्मनी ने पूरे प्रांत को अपना प्रभाव क्षेत्र भी घोषित कर लिया। साम्राज्यवादियों ने तटीय जहाजरानी और रेलपथ शुरू किये तो उनका रोजगार के स्वरूप पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। अनेक कुली, फेरीवाले और छोटे व्यापारी बेरोजगार हो गये। इससे कुल बिगड़ती सामाजिक-आर्थिक स्थिति और बदतर हो गयी।

उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक, गिरजाघरों का एक जाल पूरे चीन में फैल चुका था। अकेले शांतुंग में एक हजार से ऊपर गिरजाघर और कोई अस्सी हजार मिशनरी और नव-ईसाई थे साम्यवादियों के सत्ता में आने के बाद लिखे गये चीन के आधिकारिक इतिहास के अनुसार, मिशनरियों को चीनी जनता के खिलाफ हमले के हथियारों के रूप में इस्तेमाल किया जाता था जैसा कि एक विवरण से पता चलता हैः

''अनेक मिशनरी – अपने महाधर्माध्यक्षों (आर्कबिशप), धर्माध्यक्षों (बिशप) और अन्य वरिष्ठ धर्माधिकारियों के निर्देशन में गुप्त सूचनाएं एकत्रित करते थे; जबरन खेत-खलिहान को हथिया लेते थे; निचली अदालतों पर दबाव डालते थे; लोगों से धन वसूलते थे; गुंडों और दूसरे गलत तत्वों को धर्मान्तरण के लिए खरीदते थे; वारदातें कराते थे; आम चीनी आदमी पर धौंस जमाते थे; और हत्या जैसे अपराध करते थे। प्लेग की तरह उन्होंने चीनी जनता को असीम कष्ट दिये, बड़े-छोटे चिंग अधिकारी साम्राज्यवादी अत्याचार के आगे नाक रगड़ते थे, जनसाधारण और मिशनरियों के बीच झगड़ों में वे हमेशा मिशनरियों का बचाव करते थे और जनसाधारण का दमन करते थे और उनके लिये सिर छिपाने को कोई जगह नहीं रह जाती थी।''

उपर्युक्त विवरण पढ़ने के बाद यह समझ में आ जाता है कि मिशनरियों के विरोध की घटनाएं इतनी अधिक क्यों हुईः प्रत्येक मामले में साम्राज्यवादी दंड की मांग करते थे, हरजाना वसूलते थे, और इस तरह-ईसाई धर्म-संस्था का विस्तार करते थे। ऐसे में चीनी लोग साम्राज्यवादियों और उनके पिछलग्गुओं के खिलाफ हथियार उठाने के अलावा और क्या कर सकते थे।

14.4.2 विद्रोह

विदेशी गिरजाघरों के विरुद्ध जनता के संघर्षों की शुरुआत 1896 में शांतुंग में **ता ताओ हुई**

(बृहत् खड्ग संगठन) (Big Sword Society) नाम के एक गुप्त संगठन के नेतृत्व में हुई, 1897 और 1898 में भी ऐसे ही संघर्ष छिड़े। **यी हो तुआन** आंदोलन ने जल्दी ही शांतुंग को अपने घेरे में ले लिया और अन्य जगहों पर भी यह आंदोलन फैल गया।

इस संगठन के सदस्यों में किसान, दस्तकार, शहरी गरीब और बेरोजगार दिहाड़ी मजदूर थे। इस संगठन की कभी कोई केंद्रीय शाखा नहीं रही। इसकी बुनियादी इकाई "**ताओ या मंदिर**" थी जिसके सदस्य युवक किशोर और अनेक स्त्रियां थीं: नेतागण और साधारण सदस्य दोनों ही कठोर अनुशासन का पालन करते थे और संगठन को एकजुट रखते थे। बॉक्सर दस्ते में 10 योद्धा होते थे और 10 दस्तों की एक वाहिनी (ब्रिगेड) होती थी।

सन् 1899-1900 की सर्दियों में, बॉक्सरों ने साम्राज्यवाद का विरोध करने की गरज से शांतुंग में मिशनरियों और गिरजागरों पर हमले किये, पीकिंग स्थिति विदेशियों ने आंदोलन के तेज होने की आशंका को देखते हुए चिंग सरकार पर दबाव डाला कि वह इस आंदोलन को दबाये। शांतुंग के शासक राज्यपाल, यू शिन, को हटा दिया गया और उसकी जगह युआन-शी-काई आया जिसकी "नव सेना" एक शक्तिशाली राजनीतिक शक्ति के रूप में उभर रही थी। विद्रोह को कुचलने के लिये उसने यी हो तुआन पर प्रतिबंध का ऐलान किया। इस विद्रोह को दबाने के अपने अभियान के तहत उसने सैनिकों को आज्ञा दी कि वे बॉक्सरों से जुड़े किसी भी व्यक्ति को गोली मार दें, उसने सैनिकों को यह आश्वासन भी दिया कि ऐसा करने पर उन्हें पूरी सुरक्षा दी जायेगी।

यी हो तुआन ने अपनी साम्राज्यवाद-विरोधी गतिविधियों को बरकरार रखते हुए युआन की सेना से बहादुरी और चालाकी के साथ संग्राम किया। युआन ने अपनी सेना में नई टुकड़ियां जोड़ कर उसे मजबूत कर लिया। उसने जर्मन फौजों और उन दूसरी सशस्त्र सेनाओं की भी मदद मांगी जिन्हें साम्राज्यवादियों ने **यी हो तुआन** के नरसंहार के लिये गठित किया था। **यी हो तुआन** को भारी नुकसान हुआ। सन् 1900 के वसंत काल में, भारी संख्या में बॉक्सर शांतुंग छोड़ कर पीकिंग क्षेत्र के पड़ोसी चिल्बी (आज के होपे प्रांत) में चले गये। इसके बाद उनकी अधिकांश गतिविधियां इसी क्षेत्र में चलीं लेकिन उनका प्रभाव शांसी, आंतरिक मंगोलिया, होनान और चीन के उत्तर-पूर्वी प्रांतों में भी महसूस किया गया। बॉक्सरों को स्थानीय बाशिंदों का व्यापक समर्थन मिला। उनकी मदद से उन्होंने सरकारी सेनाओं से लड़ाइयां लड़ी और वे मिशनरियों, नव-ईसाइयों और उनके समर्थकों को मौत के घाट उतारते रहे। गिरजाघरों, विदेशियों की संपत्तियों, आवासों आदि का विनाश छिट-पुट तौर पर और क्रमबद्ध ढंग से भी जारी रहा। मई महीने में **यी हो तुआन** ने पीकिंग के दक्षिण में महत्वपूर्ण शहर चोचो पर कब्जा कर लिया – उनकी लड़ाई चलने के साथ-साथ उनके सदस्यों की संख्या भी बहुत बड़ी होती गयी जिससे चीन में विदेशी ताकत और चिंग सरकार भी खतरा खा गयी।

कुछ ही दिनों में बॉक्सर सेनाएं पीकिंग में घुस गयी। उन्होंने राजधानी आने वाले रेलपथों को नष्ट कर दिया जिससे उत्तर और दक्षिण से आ सकने वाली सरकारी नेताओं का रास्ता बंद हो गया। पीकिंग में **यी हो तुआन** की सेनाओं ने पहले छोटी-छोटी टुकड़ियों में गुप्त रूप से गतिविधियां की थी। उन्होंने "विदेशियों का विनाश करो" अभियान की मांग करने वाले गुमनाम इश्तिहार लगाये थे। राजधानी में मजदूर वर्ग के अनेक लोगों के इस संगठन में शामिल हो जाने से इसके सदस्यों की संख्या बहुत अधिक हो गयी – इश्तिहार अभियान से कई लोग इस आंदोलन से जुड़े। उनके इश्तिहार जनता की साम्राज्यवाद-विरोधी भावना और उस शासक वंश के प्रति उनकी चिढ़ को परिलक्षित करते जिसके बारे में उनका विश्वास था कि यह वंश विदेशियों के सहयोग से अपनी ही जनता का दमन कर रहा था। एक जनप्रिय इश्तिहार का पाठ यह था:

> "बहुत घृणा है हमें उन संधियों से जो देश को हानि पहुंचाती और जनता को संकट में डालती हैं। उच्चाधिकारी देश से गद्दारी करते हैं। निचले दर्जे के अधिकारी उनका अनुसरण करते हैं। जनता को उनकी शिकायतों का कोई हल नहीं मिलता"।

जून 1900 के प्रारंभ तक पीकिंग **यी हो तुआन** के इश्तिहारों से भर गया था। इसके सदस्य दिन में और रात में भी पीकिंग शहर में आने लगे। शहर के फाटक पर तैनात गारदों ने भी उन्हें, या तो सहानुभूतिपूर्ण भावनाओं के कारण या भयवश, रोका नहीं। लाल पगड़ियाँ और कमरबंद और लाल किनारी वाले जूते और मोजे पहने बॉक्सर तलवारें और भाले लिये राजधानी की सड़कों पर निकले। कुछ ही समय में पीकिंग में 800 से भी अधिक धार्मिक स्थल स्थापित किये गये। वे लोग शाही और सामंती घरानों में ठहरे, पूरे शहर में फैल गये

और उन्होंने विदेशियों पर हमले किये। असहाय विदेशियों ने दूतावास की रिहाइशों में या गिरजाघरों में सशस्त्र सुरक्षा के अधीन शरण ली। बॉक्सरों ने अपने प्रदर्शन अधिकांश तौर पर रात में किये। उन्होंने लोगों से आग्रह किया कि वे विदेशी वस्तुएं न ख़रीदें। उन्होंने शिक्षा देना और दूसरे अभियान जारी रखे।

इसके साथ-साथ, ऐसे ही संघर्ष त्येनसिन में भी शुरू हुए और चले। यहां आंदोलन की शुरुआत इश्तिहार बांटने, धार्मिक स्थल स्थापित करने और सैनिक प्रशिक्षण के रूप में हुई। 1900 के मध्य तक वे अपनी तलवारें और भाले स्वयं बना रहे थे। गिरजाघरों को जलाने के साथ-साथ, उन्होंने बिजली के खंभों को भी तोड़ा और सीमा-शुल्क के कार्यालय को नष्ट कर दिया। दो-तीन महीनों में बॉक्सर विद्रोह ने समूचे पीकिंग-त्येनसिंन क्षेत्र को अपने घेरे में ले लिया। यह विद्रोह साम्राज्यवाद-विरोधी था, इस का संकेत इस तथ्य से मिलता है कि विद्रोहियों की घृणा के तुरंत शिकार गिरजाघर, रेलपथ, बिजली के तार, स्टीमर और विदेशी सामान बने। सन् 1900 की गर्मियों में पीकिंग और त्येनसिंन पर वास्तव में यी हो तुआन का कब्ज़ा हो गया था।

शांतुंग में शुरू होने वाली अपनी नाटकीय गतिविधियों के कुछ ही महीनों के भीतर, बॉक्सरों ने महान दीवार के दोनों ओर और पीली नदी (हवांग हो) के मध्यवर्ती और निम्नवर्ती कछारों पर अपना विद्रोह का झंडा उठा लिया था। जब साम्राज्यवादी ताकतों ने यह देखा कि मांचू सरकार इस जनप्रिय विद्रोह को दबाने में अशक्त थी तो उन्होंने बॉक्सरों को दबाने का तरीका ढूंढने के लिये आपस में विचार-विमर्श शुरू कर दिया। ऐसा लगता था कि चीन में उनका अस्तित्व दांव पर था। जुलाई-अगस्त, 1900 तक कांगफू, ह्यूपे, क्यांगसी, फ्यूकिएन, क्यांगसी, शांती और कांसू प्रांतों में कई जगहों पर साम्राज्यवाद-विरोधी इश्तिहार दिखायी पड़े। सार्वजनिक मनोरंजन स्थलों पर लोग बाक्सिंग और दूसरी चीनी युद्ध-कलाओं का अभ्यास करते भी दिखायी दिये, इनमें से अनेक स्थानों पर लोगों ने गिरजाघरों को आग लगा दी और मिशनरियों को भगा दिया। ऐसे कई स्थानीय गुप्त संगठन, जो प्रारंभ में बॉक्सर विद्रोह का अंग नहीं थे, इस हिंसक साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष में बॉक्सरों के साथ शामिल हो गये।

14.4.3 साम्राज्यवादियों का हस्तक्षेप

बॉक्सरों के मांचू-विरोधी दृष्टिकोण और उन्हें दबाने के युआन शी-काई और अन्य राजतंत्रीय सैनिक उच्चाधिकारियों के प्रयासों के बावजूद, विधवा साम्राज्ञी, ज्यू त्सी की इस मुद्दे पर स्थिति अस्पष्ट रही। एक राजाज्ञा में तो यह कहा गया कि सभी विद्रोहियों को लुटेरा न माना जाये। एक और राजाज्ञा में यह कहा गया कि संगठन के सदस्य ''आपसी निगरानी रखने और आपसी मदद देने'' के प्राचीन सिद्धांत पर अमल करें। इससे साम्राज्यवादी और भी हताश हो गये और बॉक्सरों ने, बहुत संभवतः इसे आगे बढ़ने का संकेत या हरी झंडी समझा, विदेशी अधिकारी भी यह मानते थे कि राजदरबार के कई वरिष्ठ अधिकारी और कुछ राज्यपाल गुप्त रूप से इस ''राजद्रोही गुप्त संगठन'' को प्रोत्साहन दे रहे थे। इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, रूस और अमेरिका के पांच विदेशी दूतों ने भी यह मांग की कि चीन सरकार यी हो तुआन को एक अपराधी संगठन घोषित करें, जिसका अर्थ यह होता कि बॉक्सर विद्रोह पर राजदरबार के अपने ही दृष्टिकोण का खंडन किया जाये। मांचू सरकार ने इसे अपने मामलों में सीधा हस्तक्षेप माना और यह महसूस किया कि विदेशी उनके लिये बॉक्सरों की अपेक्षा कहीं बड़ा खतरा थे।

मई आते-आते, विदेशी ताकतों ने अपनी सेनाओं को बॉक्सर विद्रोहियों के साथ टकराव के लिये तैयार करना शुरू कर दिया। आठ ताकतों – इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, आस्ट्रिया, इटली, जापान, अमेरिका और रूस – ने एक संयुक्त कमान बनायी। चीन में बने रहना उन सबका समान स्वार्थ था और चीनी राष्ट्रवाद पर प्रहार करने की गरज से फिलहाल उन्होंने अपने मतभेद भुला दिये। चीनी विदेश मंत्रालय (जोंगली यामेन) ने इन ताकतों से आग्रह किया कि वे अपनी सेनाओं को आगे न बढ़ायें। जब इस आग्रह पर कोई ध्यान नहीं दिया गया तो, चीन सरकार युद्ध के लिये तैयार हो गयी। पीकिंग पर संयुक्त सेनाओं की चढ़ाई चीन की प्रभुसत्ता लिये सीधा खतरा थी।

शाही सभा ने इन आठ ताकतों के सशस्त्र हस्तक्षेप से पैदा होने वाली स्थिति पर विचार-विमर्श करने के लिये 16 जून को एक बैठक निश्चित की। इस बैठक में बॉक्सर आंदोलन पर सामंतों और राजदरबार के वरिष्ठ अधिकारियों के भिन्न दृष्टिकोण सामने आये। इसमें स्पष्ट रूप से बॉक्सर-समर्थक और बॉक्सर-विरोधी दो गुट दिखायी दिये। विदेशी

ताकतें सशस्त्र दमन की ठाने हुए थी, इसलिये राजदरबार ने एक राजाज्ञा जारी करके 21 जून, 1900 को युद्ध का ऐलान कर दिया। राजनायिकों से 24 घंटे के अंदर पीकिंग छोड़ देने को कह दिया गया, बाद में यह अवधि बढ़ा दी गयी। निर्धारित समय-सीमा समाप्त होते ही, चीनी सेनाओं ने दूतावासों पर गोलाबारी कर दी।

उत्तरी चीन में युद्ध छिड़ा तो, दक्षिणी प्रांतों के राज्यपालों और वाइसरायों ने विदेशी ताकतों का साथ दिया और उनसे लड़के के राजदरबार के निर्णय की अवहेलना कर दी। इससे राष्ट्र की फूट सामने आ गयी, जिससे साम्राज्यवादियों के लिये चीन का विभाजन करने और इसे पूरी तौर पर अपने अधीन करने के प्रयास का काम और भी आसान हो गया। 29 जून तक, पीकिंग सरकार ने एक अलग रुख अपना लिया। विधवा साम्राज्ञी ने अपने राजनयिकों के माध्यम से विदेशी सरकारों को यह स्पष्ट करने का प्रयास किया कि दंगाई "भीड़" को खत्म कर दिया जायेगा और सभी विदेशी दूतावासों की सुरक्षा की जायेगी, चिंग सरकार के इस रवैये से युद्ध की घोषणा के पीछे के उसके मंतव्य पर प्रश्न चिन्ह लग जाता है। चीनी माम्यवादी इतिहासकारों के अनुसार यह मांचू शासकों की एक युक्ति मात्र थी जिनका अंतिम और असली इरादा यी हो तुआन को सफाया करना, विदेशी ताकतों के साथ सहयोग करना और अपना शासन बनाये रखना था।

चीनी शासक वर्ग के एक बड़े हिस्से के सीधे समर्थन और एक दूसरे हिस्से के निष्क्रिय विरोध की स्थिति में, आठ राष्ट्रों की संयुक्त सेना ने जम कर लूटमार की, आसपास के क्षेत्रों में आतंक फैलाया और बॉक्सर विद्रोह को दबाने के लिये हिंसक कार्यवाहियां की : उनके युद्धपोत यांगसी नदी पर फैल गये और तोपवाहक नौकाओं की चीनी बंदरगाहों पर गश्त बढ़ गयी। उन्होंने साम्राज्यवादी ताकतों में अपनी सुरक्षा की निश्चितता देखने वाले जमींदारों और कुलीनों से दोस्ती गांठ ली।

यी हो तुआन के योद्धा आठ ताकतों की संसाधन और प्रौद्योगिकी की दृष्टि से कहीं अधिक संपन्न संयुक्त सेना के खिलाफ बहादुरी से लड़े। जुलाई-अगस्त 1900 में भीषण युद्ध हुआ जिसमें दोनों ओर जान-माल का नुक्सान हुआ। अंग्रेजी सेनाएं और रूस और जापान की सेनाएं भी पीकिंग में घुस आयीं और अगस्त के मध्य तक पीकिंग विदेशी ताकतों के हाथों में आ गया। जैसे ही पीकिंग पर नियंत्रण का यह समाचार मिला, विधवा साम्राज्ञी और उसकी चौकड़ी पीकिंग से भाग खड़ी हुई।

और स्थानों पर भी भीषण युद्ध चला। बॉक्सर विद्रोहियों ने हर जगह कड़ा संघर्ष किया लेकिन अंत में उन्हें पराजय का मुंह देखना पड़ा। साम्राज्यवादी सेनाएं अपनी जीत से ही संतुष्ट नहीं हुई उन्होंने चीनी जनता पर अत्याचार और ज्यादतियां भी की : मार-काट, लूट, बलात्कार और आगजनी करने के अलावा उन्होंने कलाकृतियों, वैज्ञानिक उपकरणों, दुर्लभ पुस्तकों और चित्रों, अर्थात् चीन की प्राचीन, गौरवशाली सभ्यता के सभी जीवंत प्रमाणों को नष्ट कर दिया।

जुलाई 14, 1900 को त्येनसिन का पतन हो जाने के बाद चिंग सरकार ने संधि की मांग रखी और साम्राज्यवादी ताकतों को शांति वार्ता का खुला निमंत्रण दिया, लेकिन आठ राष्ट्रों की संयुक्त सेना पीकिंग पर कब्जा कर लेने के बाद ही हमले रोकने को सहमत हुई।

अगस्त के अंतिम दिनों में बातचीन शुरू हुई, लेकिन हस्तक्षेप करने वाले आठ राष्ट्रों को शांति की शर्तों पर आपस में सहमत होने में कुछ समय लगा। फिर भी, शायद आपस में कुछ कूटनीतिक युक्तियों के बाद, उन्होंने चीनी सरकार के साथ कुख्यात बॉक्सर प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किये जिसके साथ ही चीनी इतिहास में बॉक्सर प्रकरण का औपचारिक अंत हुआ लेकिन इस प्रोटोकॉल से एक लोचदार साम्राज्यवाद-विरोधी लहर की भी शुरुआत हुई जिसने एक दशक के अंदर न केवल चिंग वंश का बल्कि पूरी सम्राट-व्यवस्था का ही सफाया कर दिया।

14.4.4 बॉक्सर प्रोटोकॉल

संयुक्त सेनाओं में चीन को विभाजित करने के तरीके पर आपस में समझ न बन पाने के कारण चीन का बंटवारा होने से बच गया। इन ताकतों के बीच प्रतिद्वंद्विता भयंकर रूप ले चुकी थी। लेकिन अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काफी वाद-विवाद के बाद दिसम्बर 1900 में चीन को एक संयुक्त पत्र दिया गया। इसके तुरंत बाद विचार-विमर्श शुरू हो गया। बातचीत कई महीनों चलती रही और दिसम्बर 1901 में जा कर ही अंतिम समझौतों पर हस्ताक्षर हुए।

सितम्बर 7, 1901 के इस बॉक्सर प्रोटोकॉल में 12 अनुच्छेद थे। ये इस प्रकार थे:

1. चीन के शाही परिवार का एक सदस्य बर्लिन जा कर एक जर्मन मंत्री बैरन बॉन केफलर की हत्या के लिये चीनी सम्राट और ग्रांड कौंसिल की ओर से जर्मन सम्राट से खेद प्रकट करेगा। उसकी हत्या के स्थल पर एक स्मारक बनाया जायेगा
2. जिन-जिन शहरों में विदेशियों की हत्याएं हुई थीं या उनके साथ दुर्व्यवहार किया गया था, उन तमाम शहरों में लोक सेवा परीक्षाओं का निलम्बन।
3. चीन की राजस्व परिषद् का उपाध्यक्ष जापान जाकर जापानी लिगेशन चांसलर की हत्या के लिये चीनी सम्राट और सरकार की ओर से खेद प्रकट करेगा।
4. जिन-जिन विदेशी ठिकानों को "अपवित्र" करना पड़ा था, वहां प्रायश्चित का प्रतीक स्मारक बनाया जायेगा।
5. पांच वर्षों तक हथियारों और गोला-बारूद का आयात नहीं होगा।
6. पीकिंग स्थित विदेशी दूतावास को विदेशियों के आवास के लिये आरक्षित रखा जायेगा।
7. पीकिंग स्वतंत्र सामुहिक संचार में बाधक बनने वाले ताकू और अन्य किलों को ढहा दिया जायेगा।
8. कुछ विशिष्ट केंद्र पश्चिमी ताकतों के कब्जे में रहेंगे।
9. एक राजाज्ञा जारी करके विदेश-विरोधी किसी भी संगठन में शामिल होने वाले व्यक्ति के लिये मृत्यु दंड का प्रावधान रखा जायेगा।
10. विदेशी भागीदारी से नदी, सफाई परिषदों की स्थापना और वाणिज्य और जहाजरानी की विद्यमान संधियों में संशोधन करने के लिये बातचीत की जायेगी।
11. **जोंगली यामेन** (विदेशी कार्यालय) में सुधार किया जायेगा और उसे छह अन्य मंत्रालयों के ऊपर विदेश मंत्रालय का दर्जा दिया जायेगा।
12. चालीस वर्षों की अवधि में 33 करोड़ 30 लाख अमेरिकी डालर के हरजाने का भुगतान किया जायेगा। (ब्याज की दर इतनी ऊंची थी कि रकम भुगतान की अवधि में दुगनी हो जाये)।

बॉक्सर प्रोटोकॉल का एक-एक प्रावधान चीनी प्रभुसत्ता और आत्म-सम्मान पर प्रहार था। हरजाने वाला प्रावधान सबसे कठोर था क्योंकि यह चीन के संसाधनों की तबाही करने वाला था। प्रत्येक वर्ष चीन की पहले से ही गरीब जनता पर डेढ़ करोड़ डालर के भुगतान का बोझ पड़ रहा था। भुगतान का जो तरीका रखा गया था उससे चीन की प्रभुत्ता के अत्यंत व्यापक अतिक्रमण का बोध होता था। हरजाने की जमानत के तौर पर निम्न संसाधनों को लिया गया था:

- समुद्री सीमा-शुल्क और आंतरिक सीमा-शुल्कों का वह अंश जो अब तक चीनी नियंत्रण में था, और
- नमक कर जैसा कि किसी ने कहा था, मांचू सरकार "पश्चिमी ताकतों के लिये ऋण वसूलने वाला अधिकरण" बन गई।

बॉक्सर प्रकरण का अंत तो हो गया, लेकिन इससे चिंग सरकार द्वारा शुरू किये गये सुधारों का खोखलापन उजागर हो गया, क्योंकि इनसे चीन को अपमानजनक स्थिति से बचाया नहीं जा सका। पश्चिमी ताकतों ने चीन के प्रति किसी भी चिंता या समझ से परे बर्ताव किया।

14.5 विद्वानों की बहस

विद्वानों ने बॉक्सर विद्रोह की असली प्रकृति, इसके प्रभाव और प्रतिक्रियाओं को समझने के लिये विविध स्रोतों का उपयोग किया है। इनमें प्रमुख हैं:

- चीन में उलझी विदेशी ताकतों के अधिकारिक प्रकाशन,
- मिशनरी दस्तावेज़ और लेख,

- चीन में उस समय रह रहे इतिहासकारों और दूसरे विद्वानों की पांडुलिपियां, और
- चीनी सरकार के प्रकाशन और दस्तावेज।

इन सभी को एक साथ लिया जाये तो इनसे काफी जानकारी मिलती है।

फिर भी, बॉक्सर विद्रोह की प्रकृति को लेकर अभी बहस चर रही है, क्या यह मुख्य तौर पर ईसाई-विरोधी या साम्राज्यवाद-विरोधी था? यदि यह ईसाई-विरोधी था तो, क्या यह प्रोटैस्टेंट-विरोधी की अपेक्षा कैथोलिक-विरोधी अधिक थी? बॉक्सर विद्रोही किस हद तक वंशवाद- विरोधी थे? ये सवाल हैं जिन के घेरे में बहस चलती हैं। विद्रोह के परिणाम के बारे में मार्क्सवादी-लेनिनवादी दृष्टिकोण यह है कि चीनी सामंतवाद और विदेशी साम्राज्यवाद के बीच एक सुनियोजित षड़यंत्र ने इस आंदोलन को कुचला। गैर-मार्क्सवादी विवेचना यह कहती हैं कि चीनी व्यवस्था का आधुनिकीकरण असफल होने के कारण चीन एक कमजोर राष्ट्र रह गया। इस तरह इसके पास इतने संसाधन नहीं थे कि वह विदेशी हस्तक्षेप को रोक पाता या जनता की मांगों को संतोषजनक ढंग से पूरा कर पाता। यही कारण था कि चिंग सरकार ने अपने आपको बॉक्सर विद्रोहियों से दूर रखा।

इस आंदोलन के बारे में एक सवाल जो बार-बार पूछा जाता है वह यह है: क्या बॉक्सर विद्रोही चीन में एक सफल राज्य कायम कर सकते थे? इसका आसान जवाब है शायद नहीं। उनके पास समर्पित सदस्य तो थे, लेकिन उनका संगठन कमजोर था। उन्हें मिलने वाले व्यापक समर्थन के बावजूद उन्हें संगठन की संज्ञा नहीं दी जा सकती क्योंकि उनकी संस्था मुख्य रूप से एक गुप्त संगठन था। इसके अलावा, विचारधारा के स्तर पर उनके पास देने को ऐसा कुछ नहीं था जो उस समय पतन के कगार पर टिकी राज्य की कन्फ्यूशियसवादी विचारधारा का स्थान ले सकता। ताइपिंग विद्रोहियों की तुलना में, उनके पास कृषि सुधार का कोई कार्यक्रम नहीं था यद्यपि उनके अधिकांश सदस्य किसान थे। उनका अकेला प्रगतिवादी सिद्धांत यह था कि वे महिलाओं को समानता का स्तर देते थे। कुल मिलाकर, उनका ध्येय चीन पर शासन करना नहीं, बल्कि अपने देश को उसके शत्रुओं से मुक्त कराना था।

बोध प्रश्न 2

1) सही उत्तर छांटिये:
   बॉक्सर विद्रोही सबसे पहले प्रांत में उभरे।

   क) हुनान

   ख) नानकिंग

   ग) शंघाई

   घ) शांतुंग

2) बॉक्सर प्रोटोकॉल चिंग सरकार और राष्ट्रों के बीच संपन्न हुआ।

   क) छह

   ख) आठ

   ग) दस

   घ) पांच

3) लगभग 10 पंक्तियों में 1901 के बॉक्सर प्रोटोकॉल के ध्येयों और उद्देश्यों के विषय में बताइये।

   ....

   ....

   ....

   ....

   ....

   ....

   ....

. . . .

. . . .

. . . .

4) **लगभग 10 पंक्तियों में बॉक्सर विद्रोह की प्रकृति पर विद्वानों के स्तर पर चलने वाली बहस के विषय में बताइये।**

. . . .

. . . .

. . . .

. . . .

. . . .

. . . .

. . . .

. . . .

. . . .

. . . .

14.6 सारांश

चीन के इतिहास में जो किसान विद्रोह होते रहे हैं, बॉक्सर विद्रोह उनमें से एक प्रमुख किसान विद्रोह था। यह उत्तरी चीन के किसानों का एक देशभक्तिपूर्ण विद्रोह था, जिसके साथ ही चीन के अन्य कई भागों में भी विद्रोह हुए जिसने चीनी राष्ट्रवाद के जन्म को रास्ता दिखाया। यह विद्रोह पहले ईसाई मिशनरियों और नव-ईसाईयों के खिलाफ शुरू हुआ और अंत में पूरी साम्राज्यवादी व्यवस्था के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया गया। यह व्यवस्था की निर्ममता, अथक दुःखों, कष्टों और गरीबी का परिणाम था। जनसाधारण और अधिकारियों की आवश्यकताओं को पूरा कर पाने में मांचू सरकार की असफलता और जनता के साथ इसके निर्मम व्यवहार ने जनता को सरकार से पृथक कर दिया। इसके साथ, चीन में साम्राज्यवादियों के अतिक्रमण, और इसे इसकी गरिमा और प्रतिष्ठा से वंचित करने के कारण भी इस विद्रोह को भड़कने का अवसर मिला। चिंग सरकार के माध्यम से इस आंदोलन को दबाने के साम्राज्यवादी ताकतों के प्रयासों को सफलता नहीं मिली क्योंकि चिंग सरकार ने इसके प्रति एक दोहरा दृष्टिकोण अपनाया। चीन के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही करने की आठ राष्ट्रों की योजना का जवाब चीन ने युद्ध की घोषणा करके दिया, जो एक कमजोर प्रयास निकला जल्दी ही शांति के लिये बातचीत शुरू हुई और इन ताकतों और चिंग सरकार के बीच तथाकथित बॉक्सर प्रोटोकॉल संपन्न हुआ। चीन से कई रियायतें हथियाने के अलावा, इस अपमानजनक संधि में हरजाने की एक बड़ी राशि की अदायगी का भी प्रावधान था। यह राशि इतनी बड़ी थी कि इसका भुगतान करने पर चीन के सभी संसाधन चुक जाते। साम्राज्यवादी ताकतों के आपस में सहमत न हो पाने के कारण चीन का बंटवारा होने से बच गया।

14.7 शब्दावली

लिगेशन : एक देश के अधिकारियों का किसी दूसरे देश में मुख्यालय (दूतावास)।

प्रोटोकॉल : औपचारिक राजनयिक प्रक्रिया।

14.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) बेरोजगारी, जनसंख्या विस्फोट, भ्रष्टाचार और संस्थागत ढांचे की विफलता, ये सब

19वीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में चीन की सामाजिक-आर्थिक स्थितियों के बिगड़ने का कारण बने। देखिये भाग 14.2

2) ग.

3) अफीम युद्ध में चीन की हार, पश्चिमी ताकतों के पक्ष में संपन्न होने वाली असमान संधियों और एकाधिकारवादी पूंजीवाद ने पश्चिमी ताकतों को चीन में साम्राज्यवाद की स्थापना करने के पर्याप्त अवसर दिये। देखिये भाग 14.3.

बोध प्रश्न 2

1) घ

2) ख

3) बॉक्सर प्रोटोकॉल का मुख्य उद्देश्य चीन का विभाजन करना और उसकी प्रभुसत्ता और अखंडता की जड़ों को खोदना था। देखिये उपभाग 14.4.3.

4) बॉक्सर विद्रोह की प्रकृति पर यह बहस चल रही है कि यह ईसाई विरोधी था या साम्राज्यवाद-विरोधी? देखिये भाग 14.5.